ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
FIS

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October-December 2020
Page Nos. 113 - 117

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

कौशल विकास संवर्द्धन के विविध पक्ष

प्रो. बनवारी लाल जैन*
डॉ. अमिता जैन**

शोध सारांश

किसी भी रोजगार से पूर्व कौशल का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। कौशल के प्रशिक्षण से जटिल कार्य भी सरल हो जाता है। व्यक्ति में निहित क्षमताओं का कौशल द्वारा प्रस्फुटन किया जा सकता है। जीवन में हम कौशल का प्रयोग करते हैं, लेकिन उसका विकास कैसे करें यह ज्ञान तथा अवबोध नहीं होने के कारण अपना प्रदर्शन ठीक से नहीं कर पाते हैं। उदाहरण के रूप में दर्जी का काम सीख रहे व्यक्ति को पहले विभिन्न कौशल जैसे काज करना, नाप करना, कपड़ा काटना, कपड़ा सीना आदि अलग–अलग कौशल में दक्ष होने पर दर्जी का कार्य ठीक कर पायेगा। कार्य में दक्षता, निपुणता, कुशलता प्राप्त करना कौशल है। कौशल में कामगार तथा कमजोरियों को दूर कर कार्य की क्षमता, गुणवत्ता व उत्पादकता को बढ़ाया जाता है। इस लेख में कौशल विकास के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है ताकि अधिक से अधिक रोजगार दक्षता, कुशलता तथा क्षमता हासिल कर सके।

Keywords : कौशल, रोजगार, इच्छा, पारंगत, आत्मनिर्भर, ज्ञान, आत्मविश्वास।

प्रस्तावना –

मनुष्य का सर्वोत्तम विकास प्रगति, उन्नति, सोच, चिन्तन, विचारशीलता, आपदा के समय ही अधिक विकसित होती है। सामान्य जीवन में मनुष्य उतना क्रियाशील नहीं होता है, जितना कठिनाई या समस्या के समय। वह अपनी मानसिक, संवेगात्मक, बौद्धिक संपदा का संश्लेषण, विश्लेषण तथा मूल्यांकन करता है। प्रतिकूल परिस्थितियां ही उसे नये–नये मार्गों को अनुभूत कराती है। यथा कोविड–19 के समय मनुष्य ने अपनी बुद्धि को विभिन्न नवाचार, नूतन प्रयोग, नवसृजन, नवीन कार्यशैली, नए मार्ग, नवोन्मेष विचार से संजोने का भरसक प्रयास किया। इससे विविध क्षेत्रों में अतुलनीय विकास हुआ यथा शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाईन क्लास का प्रचलन पूर्व में था, लेकिन उस समय कुछ ही शिक्षक और शिक्षार्थी ने उसका उपयोग किया। अब उसका उपयोग, जानकारी, कार्य, व्यवस्था को सभी समझने लगे और प्रगति भी करने लगे। ऑनलाईन क्लास के अतिरिक्त बहुत सारी ई–लर्निंग, ई–कंटेट, ई–लाईब्रेरी, वर्चुअल क्लास, वर्चुअल लैब आदि सभी को सीखा है। यह ज्ञान हमारे पास पूर्व में सन्निहित था, लेकिन क्षमता को निकालने का प्रयास वैसे ही नहीं किया जैसे बीज को वृक्ष बनाने का प्रयास हम नहीं करते हैं। प्रत्येक बीज में वृक्ष बनने की क्षमता निहित होती है, लेकिन बीज को अंकुरण हेतु वातावरण में डालना चाहिए। वातावरण के बिना बीज वृक्ष नहीं बन सकता, बिना वातावरण के बीज वृक्ष बनते तो अनाज मंडी की भरी हुई बीज से बोरियां वृक्ष बन जाती। वे इसलिए वृक्ष नहीं बन पायी क्योंकि उनको अनुकूल वातावरण, मिट्टी, खाद, पानी, प्रकाश आदि का सहयोग नहीं मिला। हम सभी में हुनर, कौशल, दक्षता और क्षमता है, लेकिन उसको विकसित करने का प्रयास नहीं किया। जब तक हम अपने हुनर को पहचानेंगे नहीं, उसका चिंतन नहीं करेंगे, उसमें रूचि नहीं लेंगे, उसे क्रियाशील नहीं करेंगे तो अपने हुनर को मजबूत नहीं बना पायेंगे। आपदा के इस समय अपने हुनर को विकसित करने के लिए कम से कम प्रतिदिन दो घण्टे का समय व्यतीत करना चाहिए। अभ्यास तथा सोच से हुनर का विकास हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पहचान करनी होगी। गहनता, सूक्ष्मता, बारीकी से स्वयं की दक्षताओं का निरीक्षण करना होगा। हम दूसरे का निरीक्षण अधिक करते हैं, अपना निरीक्षण कम करते हैं, इसलिए सृजनशील, विकासशील, प्रगतिशील चिन्तनशील नहीं बन पाते हैं।

अपने हुनर के विषय को समृद्ध करने के लिए उसी की पुस्तक, शोध पत्र, मैग्जीन, न्यूज पेपर, इनसाइक्लोपीडिया आदि का अध्ययन अधिक से अधिक करें क्योंकि ज्ञान का अथाह समुद्र है, उसमें जितने डूबेंगे उतना कम दिखाई देगा। हमें अपने क्षेत्र के समुद्र में ही मोती रूपी सीपी, आनन्द, खुशी, उल्लास व प्रसन्नता को ढूंढने का प्रयास करना चाहिए। सम्पूर्ण समुद्र में चक्कर लगावें

*विभागाध्यक्ष, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
**सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

लेकिन पहले अपने क्षेत्र के समुद्र में मोती रूपी सीपी को ढूंढें। तब ही जाकर हम अपने को आत्मनिर्भर बना सकेंगे। अतः आत्मनिर्भर हेतु हुनर के इनसाइक्लोपीडिया को समृद्ध बनावें।

पृष्ठभूमि –

कौशल विकास की यह योजना 2014–15 में प्रारम्भ हुई। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा विनिर्माण को सुदृढ़ बनाने हेतु यह कार्यक्रम संचालित है। इसमें सभी का विकास तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की भावना छिपी हुई है। 13.11.2019 तक आंकड़ों के अनुसार 16 राज्यों में 1181 विद्यालय, 1220 व्यवसायिक ट्रेनर ने 65 हजार छात्रों का कौशल विकास संवर्धन किया है।

कोरोनावायरस ने देश की युवा शक्ति को बेरोजगार बना दिया है। जीविकोपार्जन तथा व्यवसाय उपलब्ध नहीं है, क्योंकि डिग्री तो ढ़ेर सारी है व अंक भी उच्चतम स्तर के हैं, लेकिन किसी भी कार्य में कौशल तथा दक्षता नहीं है। ऐसी स्थिति के कारण बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध नहीं है। कोरोना के इस संघर्ष में '**गरीबी में आटा गीला**' जैसी स्थिति है। '**नंगाक्या धोए और क्या निचौड़े**' जैसे दिन कौशल या कार्य का हुनर नहीं होने के कारण बेरोजगारी में देखने को मिल रहे हैं। उद्योग–धन्धे भी कौशल युक्त व्यक्ति कम होने के कारण काम पर रखने के लिए तैयार नहीं है। स्मार्टहोम स्किल को युवा द्वारा बढ़ाना चाहिए। अपने घर पर रहकर कच्चेमाल से नवीन वस्तुएँ का निर्माण, नवीन वस्तुओं की खोज, नवीन कार्य में दक्षता का संवर्धन करना चाहिए। अपनी लड़ाई स्वयं को लड़ना, अपनी समस्या का समाधान स्वयं को करने का प्रयास स्मार्टहोम स्किल के माध्यम से विकसित की जानी चाहिए। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण की रिपोर्ट 2017–18 के अनुसार रोजगार करने वाले मात्र 4 प्रतिशत ये ही दूसरों को नौकरी देते हैं, इसे हमें बढ़ाना होगा। महिलाएँ 1 प्रतिशत स्वरोजगार वाली हैं, इन्हें भी कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। लाखों की संख्या में बेरोजगार हैं, उन्हें समय व मांग के अनुसार वस्तु निर्माण में लगाना, उनके कार्य में दक्षता बढ़ाना व गुणवत्ता का संवर्धन करना होगा। कुटीर उद्योग, लघु उद्योग तथा गृह उद्योग में कौशल विकास को बढ़ाना होगा। बेघर श्रमिक, मजदूर, किसान, प्रवासी मजदूर, खेतिहार, आदिवासी ग्रामीण, अर्द्धशहरी व शहरी बेरोजगार, छोटे, मध्यम तथा उच्च वर्ग सभी में नवीन तरीके से कौशल बढ़ाना आवश्यक है। अपना व्यय कम करें तथा कौशल कार्य में अधिक व्यय करें। अनावश्यक खर्च कम करें, धार्मिक व सामाजिक आयोजन में होने वाले खर्चे रोके, अनर्गल भ्रमण न करें, इंटरनेट आदि का उपयोग सार्थक काम में करें, अनावश्यक शॉपिंग न करें, इच्छाओं व आकांक्षाओं का त्याग। ऊपर शेरवानी अन्दर परेशानी को निमन्त्रण देने का प्रयास कम से कम करना चाहिए। बचत की गई राशि से कच्चामाल, कौशल बढ़ाने वाली मशीन, अन्य संसाधनों का संवर्धन करना चाहिए। कोविड–19 महामारी के बाद सभी कम्पनियों व संस्थान को कौशल विकास हेतु कार्य करना चाहिए।

राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क

(National Skill Qualification Framework-NSKQF) :

भारत सरकार द्वारा इस कौशल आधारित शिक्षा को हमें गति, क्रियाशील तथा सक्रिय बनाना होगा। यह कार्यक्रम आर्थिक वृद्धि तथा सामाजिक विकास के लिए सत्र 2014–15 में क्रियान्वित किया गया। पूर्व में यह कार्यक्रम राष्ट्रीय व्यावसायिक योग्यता शिक्षा फ्रेमवर्क (National Vocational Education Qualification Framework-NVEQF) के रूप में था। अब इसे NSKQF के रूप में जाना जाता है। यू.जी.सी. ने सन् 2013–14 में पाइलट मोड में संचालित किया। इस हेतु स्टार्टअप ग्रांट यू.जी.सी. द्वारा प्रदान की जाती है। यह कोर्स ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति के विकास हेतु संरचित किया है। एन.एस.क्यू.एफ. कोर्स एक से दस ग्रेड तक बनाये हैं, उन्हें उद्देश्य व आउटकम के साथ जोड़ा है, जिन उद्देश्यों को लेकर कोर्स तैयार किया है वे क्या परिणाम व उपयोगिता वाले होंगे। डिग्री को सामान्य तथा व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा है। विद्यार्थी इस कार्यक्रम के अन्तर्गत इस प्रकार कौशल विकास करें कि वह देश व विदेशों में भी उपयोगी बने।

कौशल विकास तत्त्व –

रोजगार सम्बन्धी जो स्थानीय क्षेत्र का जॉब दिलवाता हो, किसी संस्थान, फैक्ट्री, उद्योग की आवश्यकता, मांग व पूर्ति करता हो। उसमें पैकेज के अनुसार उसे कौशल, दक्षता को हासिल करना होता है। उस क्षेत्र से सम्बन्धित 60 प्रतिशत सामग्री होना आवश्यक है ताकि उसमें वह अपनी दक्षता व क्षमता का संवर्धन कर सके। एन.एस.क्यू.एफ. का पाठ्यक्रम पांच बिन्दुओं को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाना आवश्यक है–

1. मांग प्रक्रिया (Process Required)
2. व्यावसायिक ज्ञान (Professional Skill)
3. व्यावसायिक कौशल (Professional Skill)
4. कोर कौशल (Core Skill)
5. उत्तरदायित्व (Responsibility)

12वीं पास विद्यार्थी अपनी इन कौशलों में दक्षता लेने के बाद वह अपने क्षेत्र में रोजगार व नियुक्ति प्राप्त कर सकता है। आज इस प्रकार की योजना को बढ़ावा दिया जाना चाहिए व प्रत्येक शिक्षा संस्थानों में इन प्रोग्रामों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

कौशल के क्षेत्र –

फैशन डिजाईन, लाईफ स्टाइल डिजाईन, मानव विकास, कोसमेटिक टैक्नोलॉजी बेव डिजाईन, रिटेल मैनेजमेंट,

ऑटोमोबाईल टैक्नॉलॉजी, उत्पादन तकनीक, प्रिंटिंग तकनीकी, पब्लिक रिलेशन, सोलर ऊर्जा का संरक्षण, मिट्टी व पानी का संरक्षण, योगा, मेडिटेशन, सिलाई, बुनाई, मोबाईल रिपेयरिंग, ऑनलाईन क्लास प्रशिक्षण, प्रूफरीडिंग, लेखन कौशल, पर्यटन प्रबन्धन, आतिथ्य और पर्यटन प्रबंधन, कपड़ा डिजाइनर, न्यू डिसमेकिंग, डेटा विज्ञान, तकनीकी लेखन, गृहनिर्माण, जन–स्वास्थ्य, हस्तकौशल, ब्लूपोटरी, बागवानी, पौध–संरक्षण, पोषक पाकविधि, हेयर स्टाईल, मिट्टी के बर्तन बनाना, अहिंसा–प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवा दुग्ध वितरण, कढ़ाई, छपाई, भूमि पानी संरक्षण, भूमि सुधार, चित्रकारी हार्डवेयर डवलपमेन्ट व मैन्युफैक्चरिंग, शिल्प, हस्तकला, संगीत, वास्तुकला, खिलौने बनाना, बैग, डेटा साइंस, यूट्यूब बनाना, ऑनलाईन एप बनाना, डेटा विश्लेषण, प्रोग्राम स्टेटिक्स, डेटाविजुलाईजेशन, सॉफ्टवेयर, खादीवस्त्र बनाना, योगा एवं नेचुरोपैथी, कौशल शिक्षा आदि।

1. सर्विस : सर्विस स्किल्स व पसन्द के अनुरूप चयन की जानी चाहिए जैसे–

- इवेंट ऑर्गनाईजर
- आईटी मार्केटिंग
- रेस्टोरेंट
- फूड न्यूट्रिशन
- कियोस्क
- ट्रासपोटैशन
- स्पाकिड़सगेम

2. मर्चेडाइजिंग : ऑनलाइन बिजनेस या सेलर्स के रूप में कार्य

- रिटेलहोलसेल
- ग्रासरी
- डिपार्टमेन्टलस्टोर
- रिटेलआउटलेट्स
- ऑनलाईनसेलर्स

3. मैन्युफैक्चरिंग : कच्चामाल लेकर उत्पाद बनाना। इसमें मशीन, कच्चामाल व स्किल्ड कर्मचारी की आवश्यकता होती है।

इच्छा अनुसार कौशल विकास –

प्रत्येक व्यक्ति में हुनर होता है, उसे रूचि, योग्यता, क्षमता, दक्षता व इच्छा के अनुसार विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। कौशल का विकास इच्छा से ही पैदा किया जा सकता है, किसी कार्य में योग्यता तो है, लेकिन उसमें इच्छा नहीं है तो हुनर को बढ़ाना मुश्किल है। इच्छा के भाव से कौशल को पुष्टि मिलती है। छोटे–बड़े, युवा–बुजुर्ग, नर–नारी, गरीब–अमीर, किशोर –किशोरियां कोई भी अपनी इच्छा के अनुकूल कौशल में क्षमता का संवर्धन कर सकते हैं। क्षमता का विकास करने के लिए प्रतिदिन अभ्यास करना पड़ता है।

पारंगत –

कौशल विकास में रूचिकर कार्य में दक्षता हासिल करनी होती है। जो व्यक्ति अपने कार्य में पारंगत नहीं होगा, उसका कौशल परिपक्व नहीं होगा। आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किसी एक कौशल का चयन कर उसमें दक्षता बढ़ाने का प्रयास हमें सफलता की ओर अग्रसर करता है। कार्य कौशल का चयन कर उसमें नियमित रूप से अभ्यास, नवीनता व परिणामदायी कार्य करने पर कौशल में दक्षता सम्भव है। कौशल विकास कोर्स भारत व राज्य सरकार द्वारा संचालित है। लेकिन व्यक्ति डिग्री तक ही अपने कौशल विकास को जारी रखता है, उसके बाद उसमें अपने हुनर का संवर्धन नहीं करने के कारण वह पारंगत नहीं हो पाता है। राजस्थान में 2020 में 10 हजार विद्यार्थियों को इसमें पारंगत करने का प्रावधान रखा है। कौशल में पारंगत होने के लिए सूक्ष्म, गहन व बारीकियों से उसमें दक्ष होना होगा। गहराई तक उसका ज्ञान, अवबोध व अनुप्रयोग नहीं होगा तो विकास सम्भव नहीं है। प्रशिक्षकों का कौशल जितना अधिक होगा, विद्यार्थियों का कौशल उतना ही बढ़ सकेगा।

कौशल द्वारा आत्मनिर्भर –

कौशल विकास कार्यक्रम से ही भारत आत्मनिर्भर बन सकेगा। प्रत्येक घर में हर सदस्य अपने हुनर के अनुसार किसी न किसी सामग्री, वस्तु तथा चीज का निर्माण करें। कच्चेमाल से कम लागत में वस्तु निर्माण होगा तो हम आत्मनिर्भर बन सकेंगे। प्रत्येक क्षेत्र अलग–अलग कार्य के लिए प्रसिद्ध है। उस क्षेत्र के दक्ष, पारंगत तथा विशेषज्ञ वहां के लोगों को प्रशिक्षण दे। सरकार स्वयं उनकी वस्तुएं को खरीदे व बाजार में बिक्री किये जाने का कार्य करे तो आत्मनिर्भर बनने का कार्य कौशल विकास से किया जा सकता है। हर स्थानीय क्षेत्र में सरकार उस क्षेत्र की निपुणता के अनुरूप कौशल विकास के लिए कार्य करें। स्किल डवलपमेन्ट ही रोजगार देने में सक्षम है। यह कार्य उच्च प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ कर देना चाहिए। घर का प्रत्येक सदस्य जिसकी आयु 12 या 13 वर्ष हो गई है, वह किसी भी कार्य में वस्तुनिर्माण करें। हर घर–घर में वस्तुनिर्माण व नवीन चीजों का आविष्कार होता रहे। स्थानीय उत्पादों को महत्त्व देना उनकी मांग बढ़ाना व प्रचार करने पर जोर देना है अर्थात् लोकल फोर वोकल से हुनर कार्यकर्ताओं की मात्रा में वृद्धि होगी। आत्मनिर्भर बनाने के लिए और मेक इन इण्डिया को सशक्त बनाने के लिए कौशल कार्यक्रमों को बढ़ाना होगा। भारत अर्थव्यवस्था की इस चुनौति का सामना हुनर कार्यकर्ताओं के माध्यम से कर सकता है। स्थानीय स्तर पर निर्मित नए–नए प्रोटेक्ट तैयार करना समय की मांग है, इससे स्थानीय लोगों को रोजगार तथा कार्य प्राप्त होगा। हम रोजगार के क्षेत्र में अग्रणी बन सकते हैं। जैसे राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाने के लिए यहां के जनसमुदाय में निम्न कौशल

हैं– सोजत की मेंहदी, बीकानेर के पापड़–भुजिया, चमड़े की जूतियां, शाहपुरा के फड़ चित्र, कच्ची घानी का कोल्हू से पिला तेल आदि उद्योग, पशुपालन से दूध, छाछ, घी, पनीर आदि 70 प्रतिशत पशुपालन पर निर्भर है। पशुधन को कृषि के साथ जोड़े जाने का कौशल विकसित करना। खनिज, पशुधन, रिफाइनरी, आईटी, सौर व पवन ऊर्जा, भुजिया, पापड़, मार्बल, टेक्साइल उद्योग में कौशल युक्त राजस्थान को व्यक्ति आत्मनिर्भर बना सकते हैं। आत्मनिर्भर से तात्पर्य–स्वयं वस्तुओं का निर्माण की क्षमता विकसित करना, गुणवत्ता पूर्ण वस्तु बनाना, स्वयं के देश की वस्तु खरीदना, खुद का सस्ता माल बनाना, अच्छा सॉफ्टवेयर बनाना, अपने पैर पर खड़ा होना, नये तरीके से वस्तु निर्माण, नई सोच विकसित करना, अपनी ब्रांड बनाना आदि कौशल में दक्ष व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

कौशल और ज्ञान –

कौशल और ज्ञान से ही किसी समाज, राष्ट्र तथा विश्व का विकास सम्भव है। आज विकसित देश अपने कौशल, ज्ञान व तकनीकी से आगे बढ़े हैं। कौशल तथा ज्ञान में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक आदि विकास की शक्ति निहित है।

महिला कौशल –

गैर कामकाजी महिलाओं, ग्रामीण महिला, पिछड़े, वंचित वर्ग की महिलाओं को घरेलू उत्पाद की वस्तु निर्माण का कौशल, मांग तथा आवश्यकता के अनुकूल विकसित करना चाहिए। महिलाओं में नवीन कार्य, कौशल, वस्तुनिर्माण की दक्षता होती है। प्रत्येक घर में कौशल विकास का कार्यक्रम संचालित करना चाहिए।

कर्त्तव्य निष्ठा –

कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति काम को पूर्ण करता है, कर्त्तव्यपरायण होता है, योजना बद्धता के प्रति प्राथमिकता को महत्त्व देता है। हमेशा तैयार रहना, व्यवस्थित ढ़ंग से कार्य करना, तुरन्त काम पर लग जाना, समय सारिणी के अनुसार कार्य करते हैं, परिश्रम करना, छोटी–छोटी चीजों और विवरणों को ध्यान रखना।

मेहनत तथा कौशल से जीवन श्रेष्ठ –

मुझसे कुछ नहीं होगा, मेरा तो भाग्य खराब है, मेरे भाग्य में तो ऐसा ही लिखा है, अभी 'मेरा मूड ठीक नहीं है', 'हमारे तो कर्मफूटे है' आदि वाक्यों को लेकर सोचने वाले व्यक्ति मेहनत पर कम विश्वास करते हैं। वे नकारात्मक विचारों को लेकर रोते रहते हैं। मेहनत करने पर भाग्य से विचार बदल जाते हैं। गुनगुना पानी कभी भाप नहीं बनता है, भाप बनने के लिए पानी को खौलना पड़ेगा। जब अंधी, गूंगी, और बहरी महान् लेखिका हेनरी केलर अपनी मेहनत के बलबूते विश्व प्रसिद्ध हो सकती है। 10 प्रतिशत ही भाग्य के भरोसे जीवन हो सकता है। 90 प्रतिशत जीवन पुरूषार्थ से श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। पुरूषार्थ, कौशल अनुकूल होगा तो मेहनत रंग लाती है। पुरूषार्थ करने के बाद सफलता दरवाजे पर खड़ी होती है और कौशल होने पर सफलता मिल जाती है।

आत्म विश्वास तथा कौशल –

सफलता हासिल– जैसे अच्छी फसल के लिए पानी, मिट्टी, बीज, धूप, खाद ऊर्वर भूमि और देखभाल चाहिए, वैसे ही सफलता हासिल के लिए स्पष्ट लक्ष्य, मेहनत, निष्ठा, कौशल, बेहतर कार्य योजना, श्रेष्ठ, बुद्धिमानी, प्रबल आत्म विश्वास और समय के समुचित प्रबन्धन की जरूरत होती है। विफल से विफल व्यक्ति सफल हो सकता है यदि आत्मविश्वास तथा कौशल के साथ चले तो। आत्मविश्वास होने पर कार्य की दक्षता, योग्यता व क्षमता का संवर्द्धन कर सकते हैं। किसी भी नवीन कार्य में कौशल बढ़ाने के लिए मन में आत्मविश्वास को बढ़ाना होता है। आत्मविश्वास है तो कोई भी कार्य कठिन तथा जटिल नहीं है।

मानसिक शक्तियों को हुनर में लगावें –

सृजन करने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क में दुनिया की कोई बात नहीं आती उसके मस्तिष्क में सिर्फ अपने हुनर को श्रेष्ठ सुन्दर बनाने के विचार चलते हैं। मानसिक शक्ति जो सभी दिशाओं में घूमती है, वह उसे रोककर अपने हुनर में लगाता है तो उसके कार्य की महानता तेजी से उभर कर लोगों के समक्ष आयेगी। हमें अपनी मानसिक शक्ति विभिन्न दिशाओं में न लगाकर एक दिशा में लगानी चाहिए। ताकि मानसिक शक्तियों में बिखराव, अवांछनीय प्रक्रियाएं नहीं पनपेगी। हमारा लक्ष्य, हमारा हुनर, हमारा काम एक दिशा में होगा तो परिणाम अच्छे आयेंगे। जैसे रसोई में खाना बनाने वाली महिला की नजर रोटी सेकने पर रहती है तो रोटी जलती नहीं है अन्यथा रोटी जलने की संभावना हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में मानसिक शक्तियां के विकास की प्रचुर मात्रा होती है, लेकिन विकसित तब होगी जब उसका उपयोग सही तरीके से करना सीख जाए। अतः मानसिक शक्तियां का प्रवाह सही दिशा में, अपने हुनर की ओर मोड़ने पर ही लाभ हो सकेगा।

निष्कर्ष –

कौशल विकास से व्यक्ति का ज्ञान, भाव तथा क्रिया तीनों पक्षों का विकास आसानी से किया जा सकता है। कौशल में ज्ञान का संश्लेषण, विश्लेषण व उत्पादन निहित होता है। परिणामकारी, लाभकारी तथा उपयोगी कौशल देश को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है। कौशल में क्षमताओं के साथ दक्षता, निपुणता का संवर्धन होता है। अपने हुनर को पहचाने, उसकी बारीकियों का निरीक्षण तथा अनुप्रयोग करें, हुनर संवर्धन हेतु पुस्तक, शोध पत्र, मैग्जीन, इनसाइडक्लोपीडिया, वीडियो अवलोकन, फैक्ट्री, कारखाने, वस्तु निर्माण स्थल आदि का सूक्ष्मता से निरीक्षण करें। कुटीर उद्योग, लघु उद्योग तथा गृह उद्योग में

कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाना। संस्कार द्वारा कौशल विकास की योजनाएं व कोर्स का अधिक से अधिक लाभ लेंवे। कौशल विकास के फैशन डिजाईन, सम्प्रेषण, वस्तु उत्पादन के अनेक कौशल हो, उनमें से अपनी रूचि के क्षेत्र में निपुणता बढ़ानी चाहिए। कौशल विकास के लिए व्यक्ति में इच्छा शक्ति, कार्यशक्ति, अभ्यास, मेहनत, कर्तव्यनिष्ठा, धैर्य, योजना बद्धता, आत्मविश्वास आदि गुणों को सशक्त बनाना होगा।

संदर्भ –

1. पुरोहित, जगदीशनारायण, व्यास, हरिशचन्द्र व शर्मा, मुरलीमनोहर (2007), भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 202
2. शर्मा, आर.ए. (1992), शिक्षण तकनीकी, अजन्ता कॉलोनी गढ़रोड़ (मेरठ), पृ. 612
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी., शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2, पृ. 241

4- https://www.nsda.gov.in>nsqf

❒❒❒